*** प्र ख्या प न ***

xx "निराला की लंबी कविताएँ -- एक मूल्यांकन" xx

यह शोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु शोध--प्रबंध के रुप में प्रस्तुत कर रहा हूँ । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्व विद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई ।

दिनांक :- 28/6/95

Babar

श्री. जयवंत मधुकर बाबर
अनुसंधाता

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY

प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा
एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी.
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि.सातारा (महाराष्ट्र)

xxx प्रमाणपत्र xxx

मैं, **प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा**, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि **श्री. जयवंत मधुकर बाबर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "**निराला की लंबी कविताएँ – एक मूल्यांकन**" मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूरा किया है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है ।

मैं सुस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय ।

निर्देशक

28.6.95

(प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

xxx भूमिका xxx

मेरा बचपन से ही काव्य के प्रति लगाव था । बी.ए. तथा एम.ए. का अध्ययन करते समय आधुनिक हिंदी कवियों को अध्ययन किया था । आधुनिक काव्य का अध्ययनकरते समय मैंने सुर्यकांत त्रिपाठी "निराला" की "राम की शक्तिपूजा", "पंचवटी प्रसंग", "कुकुरमुत्ता", "तुलसीदास" आदि कविताओं का अध्ययन किया । तभीसे "निराला" जी मेरे प्रिय कवि बने । जिस वक्त एम.फिल्. के लघुशोध प्रबंध का विषय चयन के बारे में आदरणीय डॉ. सुर्वेजी ने मेरे सामने विभिन्न विषय रखे तो मैंने श्री. सुर्यकांत त्रिपाठी "निराला" को चुना । प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा जो इस लघुशोध- प्रबंध के मार्गदर्शक है, उन्होंने और डॉ. सुर्वेजी ने निरालाजी के लंबे काव्यों के बारें में मेरे मन में गहरी रुचि पैदा की, उसीके फलस्वरुप मैंने "निराला की लंबी कविताएँ - एक मूल्यांकन" विषय निहित किया ।

श्री. सुर्यकांत त्रिपाठी "निराला" के लंबे काव्यों का विश्लेषण मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है । पहले अध्याय "परिचय" में उनका जन्म - शिक्षा - विवाह - रहन-सहन - व्यक्तित्व की पहचान, कृतित्व में हिंदी काव्येतिहास में उनका योगदान आदिका परिचय होगा । दूसरे अध्याय "निराला की लंबी कविताएँ - प्रेरणा एवं स्त्रोत" में उनकी साहित्यिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रेरणा और काव्य हेतू का परिचय होगा । तीसरे अध्याय "निराला की लंबी कविताएँ - प्रेम और वेदना के निकष" में नायिका के शरीर सौंदर्य का वर्णन, प्रेम का भावात्मक रुप, प्रेम और वेदना का प्रतीकात्मक रुप, सेवाजन्य प्रेम का रुप, निराला के प्रेम और वेदना में वैयक्तिकता आदि विषयों का विवेचन किया है । चौथे अध्याय में "निराला की लंबी कविताएँ - भक्ति निरुपण के निकष" में निरालाजी पर विभिन्न प्रभाव, लंबी कविताओं में किया भक्तिद्वारा उपदेश, निराला के सगुण ईश्वर, महामाया अथवा शक्ति की उपासना, सरस्वती की वंदना, राम तथा कृष्ण की आराधना, भक्त भगवान का संबंध तथा निराला के भक्तिपरक गीतों का विवेचन आदि विषयों का विस्तृत विश्लेषण किया है । पाँचवे अध्याय "निराला की लंबी कविताएँ - राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के निकष" में निरालाजी के काव्य का सांस्कृतिक धरातल, राष्ट्रीयता का गौरवगान, लंबी कविताओं का राष्ट्रीय -- सांस्कृतिक मूल्यांकन आदि विशेषताएँ देखी जायेगी । छटे अध्याय "निराला की लंबी कविताएँ - नव्य शिल्प के निकष" में निरालाजी ने जो शिल्पगत अलंकार, छंद रस, काव्यरुप, प्रतीक, भाषा, काव्यगुण, संगीत आदि में नये-नये प्रयोग करके अपनी अभिव्यंजना पध्दति को अधिकाधिक उन्नत एवं उत्कृष्ट और विविधमुखी बनाया है उसका अध्ययन करेंगे । तो

"समापन" इस सातवे अध्याय में पहले अध्यास से लेकर छटे अध्याय तक किए गये विवेचन के आधारपर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा ।

प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा जी इस लघुशोध-प्रबंध के निर्देशक है, आप की कार्य तत्परता और समय की पाबंदी न लगाते हुए मिलनेवाले मौलिक मार्गदर्शन ने ही मुझे यह लघुशोध-प्रबंध लिखने और पूरा करने की प्रेरणा दी । आपने अत्यंत व्यस्त रहनेपर भी अपना अमूल्य वक्त मुझे देकर इस कृति का एक-एक पृष्ठ देखा, पढा और सुधारा । लघुशोध-प्रबंध की समस्त अच्छाईयों और मौलिक उपलब्धियों का पूरा श्रेय पूज्यवर डॉ. राजेंद्र शहा जी को हैं । मेरी समझ में नही आता कि उनके सुयोग्य पथ प्रदर्शन के लिए कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त की जाय ?

विषय चयन, सामग्री, संकलन तथा बार-बार इस विषय की चर्चा के द्वारा मुझे प्रेरणा देनेवाले और अपना बहुमूल्य समय देकर मुझे मार्गदर्शन करनेवाले आदरणीय डॉ. गजानन सुर्वेजी की सहायता के बिना यह लघुशोध-प्रबंध का काम मेरे हाथों से होना कठिन था । मेरे परमपूज्य "पिताजी", "मामाजी" जिन्होंने मुझे हर वक्त मार्गदर्शन करके प्रोत्साहन देकर हौसला बढाया मै उनका आजन्म ऋणी रहूँगा । इसी प्रकार मा.प्राचार्य, आर.डी. गायकवाड, प्रा. आढावजी, हिंदी विभाग प्रमुख, शिवाजी महाविद्यालय सातारा, प्रॉ.डॉ. निकमजी, प्रा.नलवडेजी, प्रा.जाधवजी आदि मुझे हमेशा प्रोत्साहन देते रहे हैं । उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ । शिवाजी महाविद्यालय सातारा, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय सातारा और मुधोजी महाविद्यालय फलटण के ग्रंथपाल तथा ग्रंभालयों के कर्मचारियों की सहायता के लिए भी मैं उनका ऋणी हूँ । इसीप्रकार मेरे मित्र परिवारों ने मुझे जो सहाय्यता दी और हौसला बढाया उसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ । इस लघुशोध-प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुति के लिए श्री. धनंजय कान्हेरेजी सातारा, और श्री. नुलकरजी सातारा, इन्होंने जो कष्ट उठाये है, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

विविध प्रयत्नों के बावजूद भी इस लघुशोध-प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रह जाना संभव है । निर्दोषता का दावा तो मैं नहीं कर सकता । फिर भी यदि सहृदय पाठकों को श्री. सुर्यकात त्रिपाठी "निराला" के लंबे काव्यों का परिचय देकर उनका रसास्वाद कराने में मुझे किंचित मात्र भी सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा ।

शोध छात्र